How to Cite:
डॉ॰ पूनम शर्मा **(Dec 2018).** बु द्ध की शरीर में प्रकृति
International Journal of Economic Perspectives,*12*(1), 203-206
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

बु द्ध की शरीर में प्रकृति

डॉ॰ पूनम शर्मा

मनुष्य के शारीरिक अंगों का अपना–अपना अनिवार्य महत्त्व है। मनुष्य के इन अंगों में बुद्धि एक अत्यधिक एवं रहस्यमय अंग है। मस्तक में सहस्र मद्म हैं। इसी मद्म की कणिका में परमात्मा अवस्थित है। मस्तक छन्नाकार होने से धनी, चिपटा होने से पिता की मृत्यु और गौ धन से सम्पन्न तथा घटाकार होने से पापी और धनहीन होता है। यह तथ्य गरूड़ पुराण में कहा गया है।

मस्तिष्क मनुष्य तथा अन्यान्य प्राणियों के मुखमण्डल को अथवा शिरोभाग को आश्रित किये हुए है। केशमण्डित ग्रीवा संलग्न जो दहभाग ऊपर रहता है। उसी को मस्तक कहते हैं। मस्तक में ही इन्द्रिय देखने की चक्षु, सूंघने की इन्द्रिय नाक, चखने की इन्द्रिय जीव, होंठ, तालु कपोल आदि देह के अंश अवस्थित हैं। मस्तिष्क मस्तक का उपादान है। मस्तिष्क के न रहने से अंग प्रत्यांग कार्य नहीं कर सकते, इसलिए कई शास्त्राकारों ने मस्तिष्क को ही ज्ञान का आधार बताया है आँख जो देखती है, नाक जो सूँघते हैं, दाँत जो चबाते हैं, गला जो निगलता है। यह सब मस्तिष्क के बिना सम्पन्न नहीं हो सकता। मस्तक में मस्तिष्क के रहने पर सभी इन्द्रियाँ अपने कामों में लग जाती हैं। मस्तिष्क की क्रिया में खराबी उत्पन्न होने से या कोई परिवर्तन होने से नींद न आना, अकारण ही बोलना और जड़ता आदि दुर्लक्षण दिखाई देने लगते हैं। मस्तिष्क को कई प्रकार के द्रव्य उत्तेजित करते हैं। जैसे अफीम, कोको, चरस ताम्रकूट, कर्पूर और बिजली का झटका, आदि ये सभी द्रव्य मस्तिष्क में कई प्रकार के रोग उत्पन्न करते हैं। मस्तिष्क ही शरीर का आधार है। अतः जिन कारणों से मस्तिष्क को क्षति पहुँचती है, हमें उन कारणों से बचना चाहिए।

मस्तिष्क की प्रक्रिया एवं स्वरूप

मानव शरीर के शिरोभाग की कठिन दीवार के भीतर मस्तिष्क होता है। चिकित्सया चन्द्रोदय में बताया गया कि यह कपाल नामक कोठा आठ अस्थियों से बना है। और खोपड़ी 22 अस्थियों से मिलकर बनती है। जिसके अन्दर जाने का कोई मार्ग नहीं है। इनमें आठ अस्थियाँ आपस में मिलकर एक सन्दूक जैसा दिखने वाला कोष्ठ बना देती हैं। शेष अस्थियाँ इसके आगे की ओर लगी रहती हैं। ये अस्थियों का कोष्ठ मस्तिष्क को सुरक्षित रखता है। मस्तिष्क अण्डे की शक्ल का होता है। इसके भीतर का भाग अखरोट के गुद्धे के सदृश होता है। मस्तिष्क के अग्रभाग की अपेक्षा पीछे का भाग अधिक स्थूल और चौड़ा होता है। इसकी लम्बाई एक कर्ण से दूसरे कर्ण तक साढ़े छः इंच और चौड़ाई साढ़े पाँच

© 2018 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: डॉ॰ पूनम शर्मा
Submitted: 27Oct 2018, Revised: 09 Nov 2018, Published : Dec 2018

How to Cite:
डॉ॰ पूनम शर्मा **(Dec 2018).** बु द्ध की शरीर में प्रकृति
International Journal of Economic Perspectives,*12*(1), 203-206
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article
इंच और मोटाई ऊपर से नीचे तक पाँच इंच होती है।

विद्वानों ने मस्तिष्क के चार भाग माने हैं। जिनके नाम निम्नलिखित हैंः—

- बृहत मस्तिष्क
- लघु मस्तिष्क
- सीता
- मातृका मूलाधार

मस्तिष्क के सभी भागों में बृहत मस्तिष्क ही सबसे बड़ा होता है। इसका रंग धूसर होता है। यह दो भागों में बंटा होता है। इन दोनों भागों के बीच में दरार होती है। इस दरार के दक्षिण वाम के भाग के मस्तिष्क के दो कोठे होते हैं। जिनमें ज़रा सा तरल होता है। इस तरल के बढ़ जाने पर कोठे फैलकर बढ़े हो जाते हैं। जिनसे रोगों की उत्पत्ति होती है। ऐसे रोगी महा मूढ़ होते हैं। बृहत मस्तिष्क को सम्मुख मस्तिष्क भी कहते हैं।

लघु मस्तिष्कः—

यह मस्तिष्क बहुत छोटा होता है। इसका आकार एक पिचके हुए गोले से बहुत मिलता है। यह मस्तिष्क के पीछे का भाग होता है। इसकी चौड़ाई चार इंच और मोटाई इंच होती है। इसे 'पश्चात' मस्तिष्क भी कहते हैं। इसके तीन भाग कहे गये हैं। बायें और दाये भाग को गोलाही कहते हैं और बीच के भाग को मध्यांश कहते हैं। इसके पृष्ठ पर कुछ सीताएं होती हैं। जो बृहत मस्तिष्क की सीताओं से कुछ भिन्न होती हैं। और इसकी सीताएं बृहत मस्तिष्क की सीताओं से अधिक गहरी होती हैं। इसका भी बाहर का भाग धूसर और अंदर का भाग सफेद होता है। धूसर भाग सेलों से और श्वेत भाग सूत्रों से बनता है।

लघु मस्तक के द्वारा ही स्नायुओं का कार्य आरम्भ होता है। लघु मस्तिष्क से ही केन्द्र विमुख आज्ञाएँ बाहर होकर वेगोत्पाद स्नायुओं के भीतर जाकर हाथ पांव चलाने का काम करती हैं। स्नायु सफेद और सुक्ष्म रंग के पदार्थ होते हैं। जो पूरे शरीर में जाल की तरह फैले रहते हैं। इनसे तिलमात्र जगह भी खाली नहीं होती स्नायु मस्तिष्क से पैदा होकर समस्त शरीर में फैले होते हैं। इन स्नायुओं का मस्तिष्क के साथ सम्बंध होने से यदि किसी के हाथ में चोट लगती है तो इसकी जानकारी मस्तिष्क तक पहुंच जाती है।

सेतुः— लघु मस्तिष्क के सामने महराब की तरह मुड़ा हुआ जो श्वेत रंग

© 2018 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: डॉ॰ पूनम शर्मा
Submitted: 27Oct 2018, Revised: 09 Nov 2018, Published : Dec 2018

How to Cite:
डॉ॰ पूनम शर्मा **(Dec 2018).** बु द्ध की शरीर में प्रकृति
International Journal of Economic Perspectives,*12*(1), 203-206
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article
का भाग होता है। उसे सेतु कहते हैं। सेतु भाग सूत्रों से बनता है। बृहत, लघु और सुषुम्ना इन तीनों अंगों से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने वाले सूत्र सेतु से ही होकर गुजरते हैं।

सुषुम्नाः– सेतु के पीछे और उससे लगा हुआ कपाल के भीतर रहने वाला मस्तिष्क का जो भाग है उसको सुषुम्ना शीर्षक कहते हैं। सुषुम्ना सेतु के पास अधिक मोटा और चोड़ा होता है एवं महाछिद्र के पास पतला।

सेतु और सुषुम्नाशीर्षक के पीछे और लघु मस्तिष्क के सामने और नीचे एक कोष्ठ होता है। उसे मस्तिष्क का चतुर्थ कोष्ठ कहते हैं।

इसके अतिरिक्त मस्तिष्क के कुछ भाग ऐसे भी होते हैं जो ढके होने के कारण मस्तिष्क को बिना काटे नहीं दिखाई देते हैं। मस्तिष्क के ऊपर तीन झिल्लियाँ चढ़ी रहती हैं। ये मस्तिष्क के आवरण कहलाते हैं। सबसे बाहर का आवरण मोटा और मजबूत होता है। इसके नीचे मध्यावरण रहता है। यह बहुत पतला और कोमल होता है। मध्यावरण के नीचे अंतरावरण होता है यह बहुत पतला होता है और मस्तिष्क से इस प्रकार चिपका होता है कि इसे अलग करना कठिन होता है।

इन सबके अतिरिक्त मस्तिष्क में नाड़ियों के 12 जोड़े होते हैं। जो मस्तिष्क के अधोभाग को देखने से दिखाई देते हैं।

मस्तिष्क का कार्यः– मस्तिष्क शरीर पर राज्य करता है। नाड़ी सूत्र और तार उसके दूत होते है और शरीर के अंगों को सूचना इन्हीं तारों द्वारा पहुंचती है। नाडत्री मण्डल में दो तरह के तार होते हैं, एक तो वह तार जो मस्तिष्क और सुषुम्ना से आरम्भ होकर अंगों को जाते हैं। उन्हें केन्द्रत्यागी तार कहते हैं। दूसरे तार वे हैं जो अंगों से आरम्भ होकर मस्तिष्क को जाते हैं। उन्हें केन्द्र गामी तार कहते हैं।

केन्द्रत्यागीतारः– यह मस्तिष्क की आज्ञा को शेष अंगों तक पहुंचाते हैं।

केन्द्रगामी तारः– ये तार अंगों के समाचार को मस्तिष्क तक पहुंचाते हैं।

मस्तिष्क का महत्त्वः– जिस प्रकार मछली जल के बिना जीवित नहीं रह सकती और जिस प्रकार गाड़ी ईंधन के बिना नहीं चल सकती है। उसी प्रकार मस्तिष्क के बिना शरीर का कोई अस्तित्त्व नहीं रह जाता। मस्तिष्क ही मानव के शरीर का आधार है। इसके बिना शरीर का कोई अस्तित्त्व नहीं रह जाता है। मस्तिष्क के द्वारा ही मनुष्य में तर्क वितर्क करने के उपाय सूझते हैं। मस्तिष्क के द्वारा ही प्राणी दया, स्नेह, शक्ति और आत्माान प्रभृति की प्राप्ति कर सकता है। मस्तिष्क ही हमारे कार्यों का आधार है। चरक संहिता में कहा गया है कि मस्तिष्क ही मन का आधार है। मस्तिष्क ही मनुष्य के ज्ञान बुद्धि और धर्माधर्म

© 2018 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: डॉ॰ पूनम शर्मा
Submitted: 27Oct 2018, Revised: 09 Nov 2018, Published : Dec 2018

How to Cite:
डॉ॰ पूनम शर्मा **(Dec 2018).** बु द्ध की शरीर में प्रकृति
International Journal of Economic Perspectives,*12*(1), 203-206
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article
का प्रधान केन्द्र है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. सुश्रुत संहिता; अम्बिकादत्तशास्त्री
2. चरक संहिता; पं॰ काशीनाथशास्त्री
3. भैषज्यरत्नावली; राधेश्वरदत्तशास्त्री
4. आयुर्वेद का इतिहास; अत्रिदेव
5. मानव शरीर की रचना; डॉ॰ मुकुंदस्वरूप वर्मा

© 2018 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: डॉ॰ पूनम शर्मा

Submitted: 27Oct 2018, Revised: 09 Nov 2018, Published : Dec 2018